HOME SCIENCE CURRICULUM.

Concept — वर्तमान युग में बालिकाओं के लिए गृह-विज्ञान शिक्षण अति आवश्यक है। यह उनकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक उन्नति का उत्तम साधन है। विभिन्न शिक्षा विचारकों के अनुसार जो शिक्षा के उद्देश्य माने गये हैं लगभग उन सबकी पूर्ति करने में यह सहायक सिद्ध हुआ है। बालाओं के वर्तमान और भावी जीवन को सुखी पूर्ण और लाभप्रद बनाने में गृह-विज्ञान का विशेष स्थान है। बालाओं को अपने व्यक्तित्व के प्रति परिवार या गृह के प्रति तथा समाज व राष्ट्र के प्रति जो उत्तरदायित्व है, उनके धारण की क्षमता इस विषय के अध्ययन से उत्पन्न होती है। व्यवसायिक क्षेत्र में ही इसके अध्ययन से बालाओं के लिए कई मार्ग खुल जाते हैं। 'गृह-विज्ञान' विषय अधिकांशतः व्यावहारिक है। इसका क्रियात्मक शिक्षण बालाओं को क्रियाशील और विचारशील बनाता है। उनकी घर के प्रति रुचि और गृह कार्यों को करने की योग्यता को बढ़ाता है। इसके उचित अध्ययन से बालाओं की विभिन्न शक्तियाँ और मनोवृत्तियाँ जाग्रत होने के लिए उत्तेजना प्राप्त करती हैं और क्रियान्वित होकर उनके सन्तुलित विकास में सहायता देती हैं। अतएव गृह-विज्ञान शिक्षण बालाओं के सन्तुलित और पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है।

आधुनिक विचारधारा के अनुसार किसी स्कूल के पाठ्यक्रम में उन विषयों और क्रियाओं का समावेश होना चाहिए, जो बालकों में उन आदतों, शक्तियों, योग्यताओं रुचियों और स्थायी भावों की जागृति में सहायक हो जो आत्म-कल्याण और उसके सहवासियों के लिए कल्याणकारी हो। इसके अनुसार गृह-विज्ञान शिक्षण का बालिका पाठ्यक्रम में उतना ही ऊँचा या महत्वपूर्ण स्थान है जितना किसी अन्य विषय का।

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, सोहा, बलिया

यह एक ओर कला है और बालाओं के लिए विभिन्न प्रकार के शिल्पों की कुशलता के प्रति का साधन है, तो दूसरी ओर विज्ञान है और बालिकाओं में वैज्ञानिक विचारधारा की जागृति करता है। शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, खाद्य विज्ञान पोषण शास्त्र, प्राथमिक चिकित्सा और गृह-परिचर्या आदि का अध्ययन उनके अपने जीवन को और भविष्य में उनके परिवार के जीवन को सुखी बनाने में बहुत सहायक होता है। यह जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाता जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की प्रेरणा जागृत करता है, विभिन्न मानसिक शक्तियाँ विकसित करता है तथा अपने गृह-कार्यों में दक्षता प्रदान कर मितव्ययतापूर्वक उत्तम गृह-निर्माण की क्षमता उत्पन्न करता है।

स्कूल पाठ्यक्रम में गृह विज्ञान को यथोचित स्थान मिल जाने के उपरान्त अब प्रश्न यह उठता है कि इसका अध्यापन किस आयु की बालाओं से आरम्भ करना चाहिए तथा किस आयु में कौन सा विषय पढ़ाया जाना उपयुक्त है। गृह-विज्ञान का विषय-विस्तार व्यापक है। अतः सम्पूर्ण विषयों के साथ-साथ करते हुए आवश्यक हो जाता है कि बालाओं की रुचि, मानसिक विकास तथा वर्तमान आवश्यकता के अनुकूल गृह-विज्ञान को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर लिया जाय और प्रत्येक खण्ड को क्रमपूर्वक समयानुकूल पढ़ाया जाये। गृह विज्ञान के सम्पूर्ण विषय विस्तार का विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रम के रूप में विभाजन करने के पूर्व हमको निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

Principal of curriculum construction

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त — विभिन्न आयु वर्ग की बालाओं की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति तथा रुचि के अनुकूल गृह-विज्ञान के पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। बालाओं के सम्पूर्ण शिक्षण काल को आवश्यकता और रुचि के दृष्टिकोण से हम चार भागों में विभाजित करते हैं—

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

क- प्राथमिक या प्राथमिक शिक्षण काल, जिसमें बच्चों की आयु 5 से 10 वर्ष तक होती है।

ख- माध्यमिक शिक्षण काल; जिसमें औसत आयु 11 से 13 वर्ष तक होती है।

ग- उच्चतर माध्यमिक शिक्षण — काल, जिसमें औसत आयु 13 से 15 वर्ष तक होती है।

घ- उच्चतर माध्यमिक शिक्षण काल — जिसमें औसत आयु 16 या 17 वर्ष तक होती है।

प्रत्येक शिक्षण काल की शारीरिक व मानसिक आवश्यकताएँ और विशेषताएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। अतः उनको देख लेने के उपरान्त ही उनके आधार पर पाठ्यक्रम, बनाया जाना चाहिए।

प्राथमिक कक्षाओं की छात्राओं की विशेषताएँ — (i) ज्ञान प्राप्त करने का शौक होता है, परन्तु पृथक विषयों के द्वारा सैद्धान्तिक रूप से दिया गया ज्ञान उनको कृत्रिम ज्ञान होता है। अतः उनको जो कुछ भी ज्ञान प्रदान किया जाय वह उनके जीवन या अनुभव से सम्बन्धित हो। इस तथ्य के आधार पर प्राइमरी कक्षाओं के बच्चों को में सामान्य या परोक्ष रूप से स्वास्थ्य के ~~विभिन्न~~ नियमों का ज्ञान, व्यक्तिगत सफाई अच्छी और नियमित आदतों का निर्माण, सहयोग और संयम आदि गुणों की उत्पत्ति करनी चाहिए। अतः इन कक्षाओं में गृह-निर्माण का पृथक विषय के रूप में शिक्षण अनुपयुक्त है।

(ii) क्रियाशीलता के प्रेमी होते हैं। छोटे बच्चे चंचल प्रकृति के होते हैं। वे जो कुछ सीखना चाहते हैं, वह स्वयं कुछ करके अपने अनुभव द्वारा ही सीख सकते हैं। गृह कार्यों में उनकी विशेष रुचि होती है। अतः इन कक्षाओं में रुचि के अनुकूल उनको गृह शिल्पों का अभ्यास कराया जा सकता है। परन्तु उनको बहुत सूक्ष्म, वैज्ञानिक या सैद्धान्तिक ज्ञान देने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। खेल-खेल में ही इन आवश्यक क्रियाओं को सिखाना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

ख- माध्यमिक कक्षाओं की छात्राओं की विशेषताएँ -

(i) इस आयु मे बालिकाएँ काल्पनिक जगत से वास्तविक जगत मे पदार्पण करती है। उनकी गुड़िया के खेलो मे अब रुचि नही रहती है। वे जीवन से सम्बंधित प्रत्येक वास्तविक कार्य को करना चाहती है। झूठ - मूठ का कपड़ा धोना या सीना या खाना पकाना अब उनको अच्छा नही लगता वो अपने कपडे स्वयं धोना चाहती है। गुड़िया के कपडे सीना या बुनना उनको ~~अच्छा~~ पसन्द नही आता वरना वे अपने छोटे भाई बहिनो के कपडे सीना या बुनना चाहती है। अपनी माँ के साथ सफाई आदि करने फूल सजाने मेज पर बर्तन आदि लगाने खाना बनाने समय सहायता देने अतिथि सत्कार मे मदद करने मे उनकी रचनात्मक या क्रियात्मक प्रवृति सन्तुष्ट होती है वे प्रत्येक कार्य सप्रयोजन करना चाहती है।

(ii) इस आयु की छात्राओ मे अच्छा या बुरा कार्य पहचानने की शक्ति जाग्रत हो जाती है जीवन मे रचनात्मक शिल्पो का महत्व समझने लगती है। और बनावट के प्रति उनकी रुचि जाग्रत होने लगती है।

(iii) इस आयु मे छात्राओ का इतना शरीरिक विकास हो जाता है और माँसपेशियो मे इतनी शक्ति आ जाती है। कि वे साधारण घरेलू कार्यो के कुछ सीमा तक आत्म विश्वास के साथ स्वतन्त्रतापूर्वक अकेले कर सकती है। और उचित से सिखाये जाने पर उच्च कोटि का कार्य कर सकती है।

(ग) उच्च कक्षाओ की छात्राओ की विशेषताएँ

(i) छात्राओं की किशोरावस्था होती है। जो उनके जीवन मे शारीरिक और मानसिक परिवर्तनो के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण है। और शिक्षा के दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम बनाने मे विशेष सावधानी रखने की अवसर है। शारीरिक विकास की गति तीव्र होती है। रुचि के अनुकूल उत्तेजना मिलने पर यह छात्राएँ आशातीत परिश्रम कर सकती है इस आयु मे छात्राएँ एक बार फिर यथार्थ से दूर काल्पनिक जगत मे विचरण करने लग जाती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

इस प्रकार गृह सम्बन्धी नये विचार नवीन ज्ञान नये आविष्कारों की चर्चा गृह कार्यों को करने के नये तरीके आदि इनको बहुत प्रभावित करते हैं।

(ii) रचनात्मक प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है। नवीनता प्रदर्शन का प्रेम होता है। छात्रायें कुछ उपयोगी वस्तु बनाने की इच्छा करती हैं।

(iii) छात्राओं को उत्तरदायित्व लेने की प्रेरणा होती है। स्कूल में वे किसी कार्य का उत्तरदायित्व लेकर भरपूर परिश्रम करके ~~आत्म~~ आत्म-प्रदर्शन करती हैं।

(iv) सौन्दर्य के प्रति प्रेम होता है। गृह-शिल्पों के ऊँचे स्तर को दिखाकर छात्राओं में सौन्दर्यानुभूति करने से उनकी उपयोग करके इन गुणों का विकास करने के लिए उत्तम साधन हैं।

(घ) उच्चतर कक्षा की छात्राओं की विशेषताएँ →

(1) शारीरिक क्षमता में वृद्धि होती है। वे स्वतन्त्रापूर्वक प्रत्येक गृह-कार्य करने की योग्यता सृजन के लिए तैयार हो जाती हैं।

2→ वे उत्तरदायित्व को लेने योग्य हो जाती हैं।

3→ कार्य-कुशलता में परिपक्वता लाने के लिए प्रेरणा जाग्रत होती हैं।

4→ व्यक्तित्व में कुछ गम्भीरता का पदार्पण होता है।

5→ विचार-शक्ति में क्रियाशीलता आ जाती है।

6→ वैज्ञानिक रूप से क्रमबद्ध योजना बनाकर अनेक गृह-कार्य कुशलतापूर्वक करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए तत्परता आ जाती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

27/08/2020